International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(6): 134-136

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(6): 134-136
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 23-08-2020
Accepted: 03-10-2020

नवनीत सिहं
1. शोधछात्र, संस्कृत विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
2. महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

CorrespondingAuthor:
नवनीत सिहं
1. शोधछात्र, संस्कृत विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
2. महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्य में राजा दिलीप चरित

नवनीत सिहं

प्रस्तावना

कवि कुलगुरू महाकवि कालिदास कृत रघुवंश महाकाव्य उन्नीस सर्गों का एक विस्तृत महाकाव्य है। इसमें 31 सूर्यवंशी राजाओं का वर्णन है। राजा दिलीप से प्रारंभ होकर राजा अग्निवर्ण की मृत्यु के पश्चात् उसकी गर्भवती पत्नी के राज्यभिषेक के उपरांत इस महाकाव्य की इतिश्री होती है। रामायण और महाभारत ये दो ही प्राचीन महाकाव्य है। बाद के सभी आचार्यों और कवियों ने इन्हें ही आधार बनाकर अन्य महाकाव्यों की रचना की है। रघुवंश महाकाव्य की कथा प्रसिद्व है। इसका उपजीव्य ग्रंथ आदिकवि वाल्मीकि कृत रामायण है। रामायण की कथा को आधार बनाकर ही महाकवि कालिदास ने 31 राजाओं का सुंदर वर्णन किया है, और इतने नायक होने के बाद भी महाकाव्यत्व में कोई भी कमी नहीं है। रघुवंश महाकाव्य के प्रथम सर्ग में और द्वितीय सर्ग में राजा दिलीप को नायक दर्शाया गया है। इनमें धीरोदात्त नायक के सभी गुण विद्यमान है। इनकी पत्नी का नाम सुदक्षिणा है। रघुवंश महाकाव्य का अंगी रस वीर रस है।

आचार्य विश्वनाथ ने भी साहित्य दर्पण के षष्ठ परिच्छेद में महाकाव्य के नायक के लक्षण बताते हुए कहा था कि महाकाव्य में एक देवता या सद्वंश क्षत्रिय जिसमें धीरोदात्त आदि गुण हो वह नायक होना चाहिए। कहीं पर एक वंश के सत्कुलीन अनेक भूप भी नायक होते है।

सर्गबन्धों महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः[1]
सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वितः।
एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा।। [2]

महाकवि कालिदास ने इसी प्राचीन परम्परा का अनुसरण करते हुए अपने रघुवंश महाकाव्य में राजा दिलीप को धीरोदात्त गुणों से युक्त दिखाया है। राजा दिलीप से ही रघुवंश महाकाव्य का प्रारंभ होता है, जिसका बड़ा ही सुंदर और विशद् वर्णन महाकवि कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य में किया है। जिसका वर्णन इस प्रकार है –

महाकवि कालिदास ने राजा दिलीप को आज्ञापालक एवं धर्मपरायण राजा के स्वरूप में स्तुत्य किया है। राजा दिलीप के शरीर की बनावट क्षत्रियों के समान ही थी जिसका वर्णन करते हुए महाकवि कालिदास कहते है कि चौड़ी छाती, बैल के समान ऊँचें भारी कंधों वाले शालवृक्ष के समान उन्नत और दीर्घ भुजा वाले, फिर भी अपने कार्य करने में समर्थ शरीर को धारण किये, राजा दिलीप ऐसे जान पड़ते थे मानों शरीर धारी क्षत्रियों का वीरता रूपी धर्म हो।

व्यूढोरस्को वृषस्कन्धः शालप्रांशुर्महाभुजः।
आत्मकर्मक्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः।।[3]

राजा दिलीप की जैसी शरीर रचना थी वैसे ही वे कुशाग्र बुद्वि वाले तथा शास्त्रों को जानने वाले और उनका अनुसरण करने वाले थे। इसीलिए वे शास्त्रानुकूल ही कार्य करते थे, और उन्हें इन कार्यों में पूर्ण सफलता भी मिलती थी।

आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः।
आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः।। [4]

आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः।
आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः।। [4]

राजा दिलीप ज्ञान शक्ति और पराक्रम में अद्वितीय थे। राजा दिलीप शत्रु हो या मित्र हो उनके साथ शास्त्रों के अनुसार बताए गए व्यवहार का अनुसरण करते थे। वे ज्ञानी होने पर भी मौन रहते थे, शक्ति होते हुए भी वे क्षमावान थे, दान देने पर प्रसन्न होते थे। राजा दिलीप में सारे गुण सहोदर की तरह साथ – साथ रहते थे।

ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात्तस्य सप्रसवा इव।। [5]

राजा दिलीप गुरू भक्त है वे सभी ऋषियो और गुरूओं का बहुत सम्मान और अभिवादन करते है। जब राजा दिलीप अपनी पत्नी रानी सुदक्षिणा के साथ गुरू वशिष्ठ के आश्रम में पहुंचते है, तो वे गुरू वशिष्ठ को नमस्कार करते है, और अपने राज्य मे सुख, शांति और धर्मानुसार हो रहे कार्यों के प्रति उत्तरदायी बताते है। राजा दिलीप कहते है कि हे गुरो! आप अपने मंत्रों के सामर्थ्य से पहले ही परोक्ष में मेरे शत्रुओं का विनाश कर देते है। अतः मेरे वाण तो प्रत्यक्ष में ही शत्रुओं का विनाश करने के कारण व्यर्थ से प्रतीत होते है।

तव मन्त्रकृतो मन्त्रैर्दूरात्प्रशमितारिभिः।
प्रत्यादिश्यन्त इव में दृष्टलक्ष्यभिदः शराः।। [6]

राजा दिलीप गुरू वशिष्ठ के प्रति अपनी कृतज्ञता को दर्शाते हुए कहते है कि हे हवन करने वाले गुरो! आप जो विधिपूर्वक अग्नि में आहुति डालते है वह ही धानों के लिए अकाल को दूर करने वाली वृष्टि रूप हो जाती है।

हविरावर्जितं होतस्त्वया विधिवदग्निषु।
वृष्टिर्भवति सस्यानामवग्रहविशोषिणाम्।। [7]

राजा दिलीप प्रजा प्रेमी थे वे अपनी प्रजा से बहुत प्रेम करते थे। वे अपनी प्रजा का पालन पोषण अपनी संतान की तरह करते थे। राजा दिलीप राज्य में दण्ड और पुरस्कार का निर्णय बहुत ही सोच विचार कर किया करते थे। वे अपनी प्रजा के लिए वस्त्र, अन्न, धन और शिक्षा की समुचित व्यवस्था करके उनकी आजीविका की व्यवस्था करते थे। महाकवि कालिदास कहते है कि जैसे सूर्य अपनी किरणों के द्वारा पृथ्वी से जल सोखकर हजार गुना वर्षा करता है, वैसे ही राजा दिलीप भी अपनी प्रजा से जो आय का छठा भाग कर के रूप में लेते थे उसे प्रजा के कल्याण में ही लगा देते थे।

प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
सहस्त्रगुणमुत्स्त्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।। [8]

महाकवि कालिदास ने प्रथम सर्ग में राजा दिलीप के प्रजा प्रेम और प्रजा के प्रति अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा को देखकर उन्हें प्रजा के पिता की संज्ञा दी है। अपनी प्रजा को नम्रता, सदाचार की शिक्षा देने से और उसकी आपत्तियों से रक्षा करने एवं अन्न और जल की व्यवस्था करके पालन करने से राजा दिलीप ही वास्तव में प्रजा के पिता थे। पिता कहलाने वाले और सब तो केवल जन्म देकर नाममात्र के ही पिता थे।

प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि।
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः।। [9]

राजा दिलीप बहुत ही दयावान थे। जब राजा दिलीप कामधेनु की पुत्री नंदिनी धेनु की रक्षा करते है और उससे प्रसन्न होकर नंदिनी राजा दिलीप को पुत्र लाभ का वरदान प्रदान करती है, तथा कहती है कि तुम मेरा दूध दोने में दुहकर पी लो तब राजा दिलीप कहते है कि हे मां! बछड़े के पीने से तथा अग्निहोत्र कर्म से बचने पर गुरू की आज्ञा लेकर मैं तुम्हारा दूध उसी प्रकार ग्रहण करना चाहता हूं, जिस प्रकार पृथ्वी की रक्षा करने और उसमें उत्पन्न अन्नादि का छठा भाग ग्रहण करता हूं क्योंकि नंदिनी के दूध पर बछड़े और गुरू वशिष्ठ दोनों का अधिकार मुझसे ज्यादा है। इसीलिए राजा दिलीप बछड़े तथा गुरू वशिष्ठ के अग्निहोत्र से बचे हुए दूध को पीने की अपनी अभिलाषा व्यक्त करते है।

वत्सस्य होमार्थविधेश्च शेषमृषेरनुज्ञामधिगम्य मातः।
औधस्यामिच्छामि तवोपभोक्तुं षष्ठांशमुर्व्या इव रक्षितायाः।। [10]

जब राजा दिलीप नंदिनी को चराने के लिए जंगल में ले जाते है और उस नंदिनी पर सिंह आक्रमण कर देता है तब राजा दिलीप अपनी निडरता का परिचय देते हुए उस सिहं को नंदिनी की जगह अपने शरीर का समर्पण कर देते है, तथा सिहं से नंदिनी को छोड़ देने की प्रार्थना करते हुए कहते है कि कामधेनु के तुल्य इस नंदिनी को मैं अपना शरीर तुम्हें देकर छुड़ाना न्यायसंगत समझता हूं। इस प्रकार तुम्हारा भोजन भी हो जाएगा और गुरू वशिष्ठ की होम आदि क्रिया भी नष्ट न होगी। जो कि इस नंदिनी के न रहने पर बंद हो जाएगी।

सेयं स्वदेहार्पणनिष्क्रयेण न्याय्या मया मोचयितुं भवत्तः।
न पारणा स्याद्विहता तवैवं भवेदलुप्तश्च मुनेः क्रियार्थः।। [11]

राजा दिलीप शौर्य से युक्त थे, उन्होनें अपनी शौर्यता और पराक्रम के बल पर संपूर्ण पृथ्वी पर शासन किया। राजा दिलीप के शौर्य का वर्णन करते हुए महाकवि कालिदास कहते है कि राजा दिलीप ने समुद्र के तटरूपी परकोटा वाली तथा सागररूपी चारों तरफ की खाई वाली दूसरें राजा के शासन रहित सारी पृथ्वी का शासन विना परिश्रम इस प्रकार किया जैसे कोई एक नगरी का शासन करता है।

स वेलावप्रवलयां परिखीकृतसागराम्।
अनन्यशासनामुर्वीं शशासैकपुरीमिव।। [12]

राजा दिलीप के शौर्य का वर्णन करते हुए महाकवि कालिदास सुमेरू पर्वत से उनकी तुलना करते हुए कहते है कि जिस प्रकार सुमेरू पर्वत ने अपनी दृढ़ता से, अपनी कांति से तथा ऊँचाई से सभी दृढ़ कांति वाले तथा ऊँचे पदार्थों को दबाकर अपने विस्तार से सारी पृथ्वी को व्याप्त कर रखा है। वैसे ही राजा दिलीप ने अपने पराक्रम, तेज और लम्बे चौड़े शरीर से सब को नीचा दिखाकर समस्त पृथ्वी मंडल को अपने अधीन कर लिया था।

सर्वातिरिक्तसारेण सर्वतेजोभिभाविना।
स्थितः सर्वोन्नतेनोर्वीं क्रान्त्वा मेरूरिवात्मना।। [13]

राजा दिलीप का शौर्य और तेज उनके चेहरे से ही झलकता था। सज्जन व्यक्ति राजा दिलीप को वैसे ही प्रिय था जैसे रोगी को कड़वी औषधि प्रिय होती है। और दुष्ट मनुष्य प्रिय होते हुए भी वैसे ही त्याज्य था जैसे सांप से डसी हुई अंगुली त्याज्य होती है।

तं वेधा विदधे नूनं महाभूतसमाधिना।
तथा हि सर्वे तस्यासन्परार्थैकफला गुणाः।। [14]

राजा दिलीप कुशल राजनीतिज्ञ थे। वे अपनी संपूर्ण प्रजा का इतना

ध्यान रखते थे कि उनके राज्य में प्रतिकूल आचरण कोई भी नहीं करता था। इसका वर्णन करते हुए महाकवि कालिदास कहते है कि भय के कारणों से रक्षा करने वाले राजा दिलीप के यश को कोई भी राजा न पा सका, क्योंकि उनके राज्य में ''चोरी'' शब्द केवल सुनने में ही आता था अर्थात् राजा दिलीप के राज्य में कोई किसी के धन का अपहरण नहीं करता था। इसीलिए उनके यश की भी चोरी न हुई।

न किलानुययुस्तस्य राजानो रक्षितुर्यशः।
व्यावृत्ता यत्परस्वेभ्यः श्रुतौ तस्करता स्थिता।। [15]

राजा दिलीप एक सुयोग्य शासक थे। उनके राज्य में प्रत्येक व्यक्ति राज्य के नियमों का पालन करता था। इसका वर्णन करते हुए महाकवि कालिदास कहते है कि जिस प्रकार चतुर सारथी से चलाए गए रथ के पहिए जरा भी लीक से इधर – उधर नहीं हो पाते है वैसे ही सुयोग्य राजा दिलीप से शासित प्रजा किंचिन्मात्र भी भगवान मनु के नियमों का उल्लंघन नहीं करती थी।

रेखामात्रमपि क्षुणादामनोर्वर्त्मनः परम्।
न व्यतीयुः प्रजास्तस्य नियन्तुर्नेमिवृत्तयः।। [16]

राजा दिलीप बहुत ही बुद्विमान राजा थे। उन्होंने अपने राज्य में प्रजा के कल्याण के लिए अनेक कार्य कराए और उनमें पूर्ण सफलता प्राप्त की। महाकवि कालिदास उनकी बुद्विमत्ता का वर्णन करते हुए कहते है कि राजा दिलीप जैसे सुंदर विशालकाय थे, वैसी ही उनकी कुशाग्रबुद्वि थी, जैसी तीक्ष्ण बुद्वि थी वैसे ही वे शास्त्राभ्यासी थे। इसलिए शास्त्रानुकूल ही कार्य करते थे, और वैसी ही पूर्ण सफलता भी उन्हें मिलती थी।

भीमकान्तैर्नृपगुणैः स बभूवोपजीविनाम्।
अधृष्यश्चाभिगम्यश्च यादोरत्नैरिवार्णवः।।[17]

राजा दिलीप की बुद्विमत्ता का वर्णन करते हुए महाकवि कालिदास कहते है कि राजा दिलीप की विशाल सेना तो केवल उपकरण ' शोभा ' मात्र थी, और उसके प्रयोजन इन दो बातों से ही सिद्व हो जाते थे, एक तो संपूर्ण शास्त्रावगाहिनी बुद्वि और दूसरी धनुष पर चढ़ी हुई डोरी।

सेना परिच्छदस्तस्य द्वयमेवार्थसाधनम्।
शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्विर्मौर्वी धनुषि चातता।। [18]

राजा दिलीप इतने बुद्विमान और ज्ञान संपन्न थे कि वे सांसारिक भोगों से दूर रहने वाले वेद वेदांग आदि के पारंगत धर्मानुरागी राजा दिलीप जवानी में ही इतने ज्ञान संपन्न हो गए कि वृद्वावस्था के विना भी उनमें बुढ़ापा जान पड़ने लगा। अर्थात् ज्ञान से बड़े बूढ़े जान पड़ते थे।

अनाकृष्टस्य विषयैर्विद्यानां पारदृश्वनः।
तस्य धर्मरतेरासीद् वृद्वत्वं जरसा विना।। [19]

राजा दिलीप एक आदर्श पति थे। उन्हें अपनी पत्नी सुदक्षिणा से बहुत प्रेम था। जब नंदिनी के आशीर्वाद से रानी सुदक्षिणा में गर्भवती के लक्षण दिखाई दिये तब राजा इतने प्रसन्न हुए कि रानी सुदक्षिणा जिस – जिस वस्तु को चाहती थी, वह वस्तु उसी समय रानी को मिल जाती थी। क्योंकि धनुष धारी राजा दिलीप अपने पराक्रम से स्वर्ग की वस्तु भी ला सकते थे। फिर इस लोक की तो बात ही क्या।

उपेत्य सा दोहददुःखशीलतां यदेव व्रव्रे तदपश्यदाहृतम्।
न हीष्टमस्य त्रिदिवेऽपि भूपतेरभूदनासाद्यमधिज्यधन्वनः।। [20]

राजा दिलीप पुत्र की प्राप्ति हेतु बहुत ही आकांक्षावान थे। पुत्र प्राप्ति के लिए ही वे अपनी पत्नी सुदक्षिणा के साथ गुरू वशिष्ठ के आश्रम में जाते है। राजा दिलीप के राज्य में कोई भी दुखी नहीं था। बस राजा दिलीप को एक ही दुःख था कि उनका वंश बढ़ाने वाला कोई भी नहीं था। उनके कोई भी।संतान नहीं थी। तब राजा दिलीप पत्नी सहित गुरू वशिष्ठ के आश्रम में जाकर उनसे कहते है कि हे गुरो! यद्यपि आपकी कृपा से मेरी समस्त सम्पत्तियां अविच्छिन्न है, तथापि आपकी इस शिष्य – वधू सुदक्षिणा से स्वसदृश पुत्र न पाकर समस्य रत्नों को उत्पन्न करने वाली भी यह पृथ्वी मुझे संतुष्ट नहीं करती है।

किंतु वध्वां तवैतस्याामदृष्टसदृशप्रजम्।
न मामवति सद्वीपा रत्नसूरपि मेदिनी।।[21]

निष्कर्ष

इस प्रकार से हम देखते है कि महाकवि कालिदास प्रणीत रघुवंश महाकाव्य के संपूर्ण द्वितीय सर्ग एवं अन्य सर्गों में राजा दिलीप का वर्णन प्राप्त होता है। ये राजा दिलीप सूर्यवंशी कुलोत्पन्न, एक प्रतापी राजा, गुरूभक्त, दयावान, शूरवीर, बुद्विमान, धर्मपरायण, आज्ञापालक, प्रजाप्रेमी, कुशल राजनीतिज्ञ, धीरोदात्त नायक के लक्षणों से युक्त रूपवान, आदर्श पति आदि विविध चारित्रिक गुणों से संपन्न दिखलाई पड़ते है। अत एव कवि कुल गुरू महाकवि कालिदास ने अपने रघुवंश महाकाव्य में राजा दिलीप के उदात्त स्वरूप को चरितार्थ करते हुए लोक प्रसिद्व बनाया है।

संदर्भ

1. साहित्य दर्पण (6/315)
2. साहित्य दर्पण (6/316)
3. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (1/13)
4. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (1/15)
5. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (1/22)
6. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (1/61)
7. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (1/62)
8. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (1/18)
9. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (1/24)
10. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (2/66)
11. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (2/55)
12. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (1/30)
13. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (1/14)
14. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (1/29)
15. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (1/27)
16. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (1/17)
17. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (1/16)
18. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (1/19)
19. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (1/23)
20. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (3/6)
21. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसीदास (1/65)